8

संयुक्त राज्य

शाऊल के अभिषेक से रहूबियाम के राजा बनने तक, 1095-975 ई.पू. (1 शमू. 11-31; 2 शमू.; 1 राजा 1-11)

I. परिचय के लिए-धर्मतन्त्र

1. मूल रूप। –इस्राएल के लोग सीनै में कौम के संगठन से ही वास्तव में एक राज्य थे। वे एक धर्मतन्त्र अर्थात परमेश्वर का राज्य थे। उनका वास्तविक राजा तो परमेश्वर ही था, परन्तु सर्वप्रथम, कुछ अर्थ में मूसा तथा महायाजक ही राष्ट्र के लिए परमेश्वर के प्रतिनिधि थे। फिर भी उनमें एक सांसारिक राजा का विचार आरज़्भ से ही लगता है। इब्राहीम के वंश से राजा उत्पन्न होने थे (उत्पत्ति 17:16)। मूसा ने राजा के लिए नियम बना दिया (व्यवस्था. 17:14–20)।

इसके अलावा, सांसारिक राजा ने इब्राहीम की प्रतिज्ञा किए हुए ''वंश'' का जिसने सब लोगों को आशीष देनी थी; शानदार प्रतिरूप दे दिया, इसलिए, बाद की भविष्यवाणी में, मसीहा दाऊद के वंश से होना था और उसने दाऊद के सिंहासन पर बैठना था।

2. राजतन्त्र में परिवर्तन। –शमूएल के बूढ़ा हो जाने पर लोगों ने अपने ऊपर एक राजा नियुक्त करने की मांग की (देखिए 1 शमू. 8)। उन्होंने इसके दो कारण बताए: शमूएल की जगह न्यायी ठहराए जाने के लिए उसके पुत्रों का अयोग्य होना और अपने आस पास के देशों की तरह युद्ध में अगुआई करने के लिए अपना राजा होने की उनकी इच्छा। उनकी इस बिनती से शमूएल का मन दुखी हुआ; कुछ तो उसके प्रति उनकी स्पष्ट अकृतज्ञता तथा, पर विशेष तौर पर अपने वास्तविक राजा के रूप में यहोवा के प्रति विश्वास न दिखाने के कारण। परन्तु उनका पाप कार्य की अपेक्षा उनके उद्देश्य में था; और परमेश्वर की ओर से उसे उनकी बात मानने की आज्ञा मिली, और यहोवा के प्रति निष्ठा रखते हुए, वह ऐसे कदम उठाता है जो उसे एक तरफ करके राजतन्त्र में प्रवेश दिलाता है।

II. शाऊल का शासन (1095-1055 ई.पू.। 1 शमू. 11-31)

1. शाऊल का चुना जाना। –*क. उसका असार्वजनिक अभिषेक।* –शाऊल बिन्यामीन के गोत्र के कीश का पुत्र था। एक दिन अपने पिता की खोई हुई गधियों को ढूंढ़ते–ढूंढ़ते वह शमूएल नबी के बारे में पूछता है। उस भेंट का नतीजा यह होता है कि शमूएल परमेश्वर के निर्देश से शाऊल का अभिषेक राजा होने के लिए कर देता है।

ख. उसका सार्वजनिक चयन। –शीघ्र ही शमूएल मिसपा में एक सभा बुलाता है। वे चिट्ठी डालकर चयन के इस काम को आगे बढ़ाते हैं। चिट्ठी शाऊल के नाम की निकलती है, जो सामान में छिप जाता है। उसका ऊंचा कद देख कर लोगों में जोश आता है। परन्तु कुछ लोग उसे ''तुच्छ'' जानकर उसका मज़ाक उड़ाते थे। शाऊल यह सब चुपचाप सह लेता है और समझदारी से राज्यभार सज़्भालकर पहचान बनाने के अवसर की प्रतीक्षा करता है।

ग. अज़्मोनियों की पराजय। –उसे शीघ्र ही अवसर मिल गया। अज़्मोनियों ने चढ़ाई करके गिलाद के याबेश के विरुद्ध छावनी डाल दी। संकट में इसके लोगों ने शाऊल से अपनी रक्षा करने की बिनती की। उसने एक जोड़ी बैल लेकर उसके बारह टुकड़े करके इस्राएल के प्रत्येक गोत्र में भेजकर संदेश दिया कि युद्ध करने वाले पुरुष तुरन्त इकट्ठे हों, वरना उनके साथ भी बैलों की तरह ही किया जाएगा। इस्राएलियों ने उसकी बात मानी और तीन लाख लोग आ गए और शाऊल ने शत्रु पर अचानक हमला करके मारकर भगा दिया।

घ. गिलगाल में राज्याभिषेक। –शाऊल की विजय से विद्रोह थम गया और गिलगाल में सब गोत्रों की दूसरी सभा में उसे आनन्द से इस्राएल के राजा का मुकुट पहना दिया गया।

2. अपने ठुकराए जाने तक शाऊल का शासन। *–क. स्वतन्त्रता की लड़ाई।* – शमूएल की अगुआई में इस्राएल ने एबेनेज़ेर में पलिश्तियों पर विजय प्राप्त की थी, परन्तु वे पूरी तरह से अधीनता से मुज़्त नहीं हुए थे; और हाल ही में इस्राएलियों से हथियार डलवाकर पलिश्तियों ने उनकी बेड़ियां पहले से भी अधिक कसनी चाही थीं। जब शाऊल को लगा कि उसका सिंहासन सुरक्षित हो गया है, तो उसने इस अपमानजनक निर्भरता को खत्म करने की ठान ली। इस युद्ध की सबसे यादगारी घटना मिकमाश में विजय थी। शाऊल के पुत्र योनातन ने अपने हथियार ढोने वाले के साथ, कुछ चोटियों पर चढ़कर पलिश्तियों पर अचानक धावा बोलकर उन्हें चकित कर दिया। शाऊल ने मौके का लाभ उठाकर उन्हें समुद्र की ओर भगा दिया।

ख. शाऊल के अन्य युद्ध। –कई देश इस्राएल पर चारों ओर से दबाव डाल रहे थे और शाऊल ने मोआब, अमोन, एदोम और उज़र पूर्व में एक सीरियाई राज्य ज़ोबा के विरुद्ध लड़कर उन पर विजय पाई।

ग. शाऊल का ठुकराया जाना। –बहुत से लोगों की तरह शाऊल भी भ्रष्ट हो गया था। वह भूल गया था कि वह इस्राएल के वास्तविक राजा का केवल सांसारिक प्रतिनिधि है। वह यहोवा के सामने बेईमान, स्वार्थी और आज्ञा न मानने वाला बन गया। उसे अमालेक को नाश करने के लिए भेजा गया, परन्तु निशानी के रूप में उसने राजा अगाग को कुछ नहीं कहा और यहोवा के लिए बढ़िया बलिदान देने के लिए अच्छी-अच्छी भेड़-बकरियां और पशुओं को छोड़ दिया। आज्ञा न मानने पर उस दिन से परमेश्वर ने उसे त्याग दिया और शमूएल ने छोड़ दिया।

3. शाऊल का पतन और दाऊद का उदय। –शाऊल के शासन का शेष भाग उचित रूप से दाऊद के इतिहास का ही भाग है। दाऊद का तो शमूएल द्वारा चुपके से राजा होने के लिए अभिषेक किया जाता है; शाऊल के दरबार में उसे राजा की निराशा को दूर करने के लिए एक संगीतकार के रूप में बुलाया जाता है; बाद में वह पलिश्तियों के साथ

एक युद्ध में गोलियत नामक दानव को मार गिराता है; लोगों की प्रशंसा और शाऊल की मूर्खतापूर्ण ईर्ष्या उसे मिलती है। तीन बार शाऊल अपने हाथों से दाऊद को कत्ल करने की कोशिश करता है; उसे विवाह के लिए अपनी बेटी देकर फंसाना चाहता है और अंत में उसे अपराधी घोषित कर देता है। शाऊल कई साल तक उसे हर जगह ढूंढ़ने के लिए उसका पीछा करता है। पलिश्तियों के साथ एक नये युद्ध में, शाऊल, जिसे परमेश्वर ने छोड़ दिया था, ने एन्दोर की एक भूतसिद्धि करने वाली स्त्री से आने वाले युद्ध में अपने भविष्य के बारे में जानने के लिए पूछा। अगले दिन गिलबो के युद्ध में इस्राएल की पराजय हुई, शाऊल और उसके पुत्र फिलिप्पी में ब्रूटस और कैसियस की तरह मारे गए। इस प्रकार गिलाद के याबेश में उदय होने वाला सूरज गिलबो में डूब गया।

4. शाऊल के शासन की विशेषताएं। -शाऊल नए-नए नगर बसाने वाला, राजनैतिक संगठनकर्ज़ा, साहित्य का संरक्षक या सच्चे धर्म का समर्थक नहीं था। वह एक सैनिक बुद्धिजीवी था और देश पर बहुत बड़ा खतरा होने और अपने पड़ोसियों के बीच सैनिक स्थिरता की आवश्यकता के समय उसने इसमें काफी योगदान दिया। इस कारण वह अपने लोगों का हरमन प्यारा था। परन्तु धर्मतन्त्र में परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए वह इतना स्वार्थी और निष्ठाहीन बन गया कि उसकी जगह एक कौमी आदर्श अर्थात परमेश्वर के मन के अनुसार व्यक्ति को नियुक्त करने के लिए उसका हटना आवश्यक था।

III. दाऊद का जीवन तथा शासन (1055-1015 ई.पू.। 1 शमू. 16-31; 2 शमू.; 1 राजा 1-11:11; 1 इति. 11-29)

इतिहास में दाऊद का स्थान। इब्राहीम, मूसा, दाऊद पुराने नियम के इतिहास के तीन बड़े नाम हैं। इब्राहीम संस्थापक था, मूसा व्यवस्था देने वाला जबकि दाऊद राजा था। उसका शासन कौमी शक्ति और समृद्धि का चरम है। परन्तु दाऊद केवल राजा ही नहीं था, बल्कि अपने लोगों का कवि भी था। इब्रानी साहित्य में मूसा के बाद दाऊद के जीवन और लेखों को सबसे अधिक स्थान मिलता है। सचमुच पुराने नियम के किसी भी पात्र से अधिक हमें उसी के इतिहास की जानकारी है। उसके जीवन तथा शासन की घटनाओं को पांच कालों में बांटा जा सकता है, जैसे:

1. काल I. -बैतलहम में चरवाहे का जीवन। *-क. जन्म स्थान व परिवार।* दाऊद यिशै का पुत्र व बोअज और रूत का पड़पोता था। यहूदा के गोत्र को, जिसमें से वह था, पुरखाओं की याकूब की आशीष में (उत्पत्ति 49:8-12) शाही गोत्र तो कहा गया था, परन्तु इसने अभी तक अपने आप को अलग दिखाने के लिए कुछ विशेष नहीं किया था। दाऊद का जन्म बैतलहम में हुआ जिसका अपने आप में अधिक महत्व तो नहीं था, परन्तु इसे पवित्र माना जाता था। यह न केवल उसका बचपन का घर था बल्कि उसके महान बेटे का जन्म-स्थान भी था।

ख. उसका व्यवसाय। -दाऊद एक चरवाहा था, जो एक दीन परन्तु सज़्माननीय

बुलाहट है, और जिसके लिए साहस और सजगता का होना आवश्यक है। उसके जवानी के समय के लिखित वीरता के कार्यों में अपने झुण्ड की रक्षा के लिए एक शेर और एक भालू को मारना था। उसके बहुत से भजनों में उसके चरवाहे के जीवन की झलक मिलती है।

ग. उसका असार्वजनिक अभिषेक। –शाऊल के ठुकराए जाने के बाद शमूएल को भेजा गया कि उसके स्थान पर यिशै के पुत्र का अभिषेक करे। वह उसके सबसे बड़े बेटे एलियाब को देखकर प्रभावित हुआ। एक पल के लिए तो लगता है कि शमूएल भी भूल गया था कि भरोसे योग्य होने के लिए आदमी का बाहरी रूप नहीं बल्कि मन की एकाग्रता आवश्यक है। शाऊल का बाहरी रूप एक सैनिक नायक का था, जो लोगों को प्रभावित करता था। यिशै के सभी पुत्र एक-एक करके आते गए परन्तु किसी को भी स्वीकार नहीं किया गया फिर दाऊद आया। वह ''यहोवा के मन के अनुसार'' आदमी है, जो इस्राएल के वास्तविक राजा यहोवा के प्रति वफ़ादार रहेगा। उसका अभिषेक असार्वजनिक ढंग से हुआ और शायद परिवार के लोगों को भी इसकी पूरी तरह समझ नहीं होगी।

घ. शाऊल के लिए संगीत बजाने वाला। –''उस दिन से लेकर भविष्य को यहोवा का आत्मा दाऊद पर बल से उतरता रहा।''[1] ''यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा'' (1 शमूएल 16:13, 14)। दाऊद के अभिषेक के बाद की स्थिति का वर्णन विस्तार से किया गया है। प्राचीनकाल की एक परम्परा के अनुसार, शाऊल के दरबानों ने संगीत से उसकी परेशानी और दुष्ट आत्मा को दूर करने की इच्छा की। युवक दाऊद जो पहले ही संगीतकार के रूप में प्रसिद्ध था, को राजा के दरबार में संगीतकार के रूप में बुलाया गया। परन्तु दरबार में उसकी उपस्थिति, केवल अस्थाई, या कभी-कभी ही लगती है, जैसा कि हम उसे फिर से पिता के झुंड के साथ देखते हैं।

ङ. गोलियत के साथ दाऊद का युद्ध। –शीघ्र ही शाऊल को पलिश्तियों के साथ एक और युद्ध लड़ना पड़ा। चालीस दिन तक गोलियत नाम का एक बहुत बड़ा शूरवीर युद्ध में केवल उसे ही हराने की चुनौती देता था, परन्तु इस्राएल में कोई ऐसा योद्धा नहीं था जो उसकी युद्ध की ललकार का जवाब देने का साहस करता। बालक दाऊद ने जिसे सेना में अपने भाइयों के लिए कुछ रसद देकर भेजा गया था, उसकी चुनौती को स्वीकार किया और बिना कोई हथियार लिए उसने अपना गोफन लेकर यहोवा में विश्वास के साथ उस बड़बोले पलिश्ती को परास्त कर दिया। इस विजय के बाद इस्राएल के साथ उसका काम बढ़ गया। दाऊद के साहसी कार्य के दो परिणाम हुए: इससे शाऊल के पुत्र योनातन की दाऊद के साथ पक्की दोस्ती हो गई और दाऊद शाऊल के सैनिक घराने का एक सदस्य बन गया।

2. काल II. -शाऊल के दरबार में दाऊद का जीवन। *-क. शाऊल की ईर्ष्या।* – सेना के युद्ध से लौटने पर महिलाएं विजय के जुलूस में गाती हुई बाहर आ गईं, ''कि शाऊल ने तो हज़ारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है।''[2] शाऊल को पता चल गया था कि वह ठुकराया हुआ राजा है और इसमें कोई संदेह नहीं कि उसे शक हो गया था कि दाऊद ही उसके बाद राजा बनने वाला है। ''तब उस दिन से भविष्य में शाऊल दाऊद की ताक में लगा

रहा।''[3]

दाऊद ने संयम रखा, परन्तु उसकी बढ़ती प्रसिद्धि ने शाऊल की ईर्ष्या बढ़ा दी। शाऊल ने दाऊद की हत्या करने के कई प्रयास किए; दो बार स्वयं हाथों से, एक बार अपने दरबारियों से उसकी हत्या करने का आग्रह किया; अपनी बेटी मीकल से उससे विवाह की पेशकश की और दहेज के रूप में एक सौ पलिश्तियों के सिर मांगकर उसे फंसाने की इच्छा की। परीक्षा के इस सारे समय में योनातन ने दाऊद से दोस्ती निभाई, परन्तु अंत में वह समझ गया कि उसके पिता ने उसकी हत्या करने का षड्यन्त्र रचा था और उसे बचाने के लिए खुलकर उसकी सहायता की।

3. काल III. -दाऊद का निर्वासित जीवन। -कई साल तक दाऊद शाऊल से बचने के लिए भगौड़ा बना रहा, उसके मित्र उसे धोखा देते रहे जिस कारण कहीं भी वह सुरक्षित नहीं था। यूसुफ, अल्फ्रेड महान, रॉबर्ट ब्रूस की तरह उसने सिंहासन पर बैठने की शिक्षा विपज़ि के स्कूल में प्राप्त की थी। शाऊल के दरबार से भागने के बाद, दाऊद नोब में शायद मन्दिर में गया जहां याजकों ने उसे खाने के लिए मेज की रोटी दी और उसे गोलियत की तलवार दे दी। वह एक पलिश्ती नगर जो उसके पुराने शत्रु गोलियत का पहला घर था, गत तक चला गया। वहां भी वह सुरक्षित नहीं रहा, ज़्योंकि जल्द ही पलिश्ती उसे पहचान लेते हैं और वह पश्चिमी यहूदा में अदुल्लाम की गुफ़ा में छिप जाता है। शीघ्र ही वीर पुरुषों की एक टोली उसके साथ मिल गई और वह उस भगौड़े दल का अगुआ बन गया। अपने बूढ़े माता-पिता को सुरक्षा के लिए यरदन पार मोआब देश में ले जाकर, वह मृत- सागर के पश्चिमी किनारे से सटे जंगली पहाड़ी देश में लौट जाता है। शाऊल हर जगह उसका पीछा करता है। शाऊल दो बार दाऊद की पकड़ में आ जाता है, परन्तु दाऊद उदार मन से उसका प्राण बज़्श देता है। वह परमेश्वर के अभिषिज़्त के विरुद्ध अपना हाथ नहीं उठाता। यद्यपि परमेश्वर द्वारा चुने जाने और अभिषेक के अधिकार से वह राजा तो है, परन्तु वह परमेश्वर द्वारा ठहराए हुए समय को प्राथमिकता देगा। इसी दौरान किसी स्थान पर दाऊद और योनातन की अंतिम मुलाकात हुई। हालात ने उन्हें एक दूसरे का शत्रु बना दिया था, परन्तु इन शूरवीरों की मित्रता को किसी प्रकार की शत्रुता का भय नहीं था। दाऊद एक बार फिर पलिश्तियों की शरण में जाता है। उनका राजा अकीश उसके साथ अच्छा व्यवहार करता है, परन्तु पलिश्ती राजाओं को उस पर भरोसा नहीं है; और शाऊल के साथ अंतिम युद्ध में, अकीश द्वारा उससे अपने ही देश के विरुद्ध लड़ाई में भाग लेने की इच्छा जताने से, दाऊद के साथ उनकी ईर्ष्या उसे एक कष्टदायक दुविधा से निकाल देती है। अंत में, शाऊल की पराजय और गिलबो की मृत्यु से दाऊद का रास्ता साफ हो गया।

4. काल IV. -यहूदा पर राजा; घरेलू विद्रोह। -यह डाकू कैसा राजा होगा? गवार किस्म का, निजी शत्रुता का बदला लेकर, सरकारी माल बेचकर, धनी बनकर? ''यहोवा के मन के अनुसार'' यह आदमी ऐसा नहीं था। भगौड़े और निर्वासित के रूप में वह एक उदार मन राजा की तरह ही था। उसने झूठ बोलने वाले एक अमालेकी को जिसे युद्ध के मैदान में शाऊल ही हत्या करने का दावा करके पुरस्कार पाने की आशा थी, मृत्यु दण्ड

देकर अपने पुराने विरोधी के साथ उदारता दिखाई। उसने शाऊल और योनातन पर भी शोक गीत लिखा। भगौड़े के रूप में दाऊद ने इतना कष्ट सहा था कि उसे यहूदा के अपने गोत्र के अगुआ का विश्वास प्राप्त था और अब उन्होंने आसानी से उसे राजा मान लिया। हेब्रोन पुरखाओं के काल का एक प्राचीन पैतृक नगर था। इब्राहीम वहां रहा था; इसहाक का जन्म वहीं हुआ था, और वहीं पर मकपेला वाली गुफ़ा में इब्राहीम और सारा, इसहाक और रिज़्का, याकूब और लिआ को दफ़नाया गया था। विजय के समय यह कनानियों का एक शाही नगर था। यहां दाऊद ने अपनी राजधानी बना ली; यहीं पर यहूदा के लोगों ने उसका सार्वजनिक रूप में अभिषेक किया था, और यहीं पर उसने एक गोत्र पर सात वर्ष तक राज्य किया था। दूसरे गोत्र शाऊल के पुत्र ईशबोशेत के साथ थे। वह कमजोर अर्थात केवल नाम का राजा था। सारा कामकाज, उसका सेनापति अज़्नेर ही चलाता था। यरदन के पूर्व में महानेम को उनकी राजधानी बनाया गया, और ग्यारह गोत्रों के समर्थन से उन्होंने एक विद्रोही राज्य को सात साल तक चलाया। सात वर्ष के गृह युद्ध के बाद ईशबोशेत ने अपने सेनापति अज़्नेर से झगड़ा किया। जो तुरन्त सब गोत्रों को दाऊद के शासन में मिलाने के लिए तैयार हो गया। इससे पहले कि वे सब गोत्र दाऊद के राज्य में मिलाए जाते दाऊद के सेनापति योआब ने अज़्नेर का कत्ल करने की मूर्खता की, ज़्योंकि शायद वह अज़्नेर से ईर्ष्या रखता था। अज़्नेर की मृत्यु से विद्रोही राज्य खत्म हो गया और दाऊद को पूरी शान से सारे इस्राएल का राजा बनाया गया।

5. काल V. –सारे इस्राएल पर राजा। –दाऊद का दूसरी बार हेब्रोन में सार्वजनिक तौर पर अभिषेक किया गया। सब गोत्रों पर तैंतीस वर्ष का उसका राज्य स्वाभाविक रूप से दो भागों या कालों में बांटा जाता है।

क. समृद्ध और शक्ति बढ़ने का काल। –यह काल परमेश्वर के प्रति निष्ठा का काल भी था। दाऊद का पहला कदम एक केन्द्रीय राजधानी का चयन करना था। यबूस या यरूशलेम एक प्राचीन कनानी राजधानी थी। विजय के बाद से दो बार–एक बार यहोशू के समय में और एक बार न्यायियों के काल में–इस नगर पर कज़्जा किया गया था; परन्तु नगर के रक्षा केन्द्र पर यबूसियों का ही कज़्जा था इसलिए नगर पर उनका ही नियन्त्रण था। दाऊद ने एक बार इस पर कज़्जा करके, इसमें वाचा हस्तांतरित कर दी जिससे यह नगर धार्मिक और राजनैतिक राजधानी बन गया। दाऊद के समय से ही यह इब्रानियों के लिए सब नगरों में प्रमुख है। परन्तु एक कनानी कबीले के इस भाग पर कज़्जा करके वह रुका नहीं। शाऊल तो युद्ध में कुशल था ही परन्तु दाऊद उससे भी बढ़कर था। उसने मिसर से फरात तक सारे देश पर अधिकार करने तक पलिश्तियों, एदोमियों, मोआबियों, अमोनियों और सीरियाई लोगों तक हर दिशा में अपनी विजय दिखा दी थी, फिनीकी (फिनिशिया) ने अपनी स्वतन्त्रता बरकरार रखते हुए अपने राजा हीराम के साथ एक मैत्री संधि कर ली। इस प्रकार इब्राहीम के साथ की गई वाचा की प्रतिज्ञा दाऊद के शासन में उसके सबसे अधिक भौगोलिक विस्तार से पूरी हुई।

ख. पतन का काल। –दाऊद चाहे जितना महान था, परन्तु परीक्षा उस पर आई। सेना

के एक अधिकारी, ऊरिय्याह की पत्नी, बतशेबा के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित कर, उसने युद्ध में उसे वहां नियुक्त किया जहां वह आसानी से मर जाता और फिर बतशेबा से विवाह कर लिया। नातान नबी ने राजा के इस अपराध का भेद उसके सामने खोल दिया और भेड़ के एक मेमने का दृष्टांत देकर उसे उसके पाप का अहसास कराया। 51वां भजन दाऊद के पश्चाताप का ही भजन है। परन्तु उसके पाप के परिणाम को कोई पश्चाताप बदल न पाया। उस दिन से दाऊद के आसमान में घरेलू कलह के बादल छाने लगे। उसका एक पुत्र अपनी बहन के साथ कुकर्म करने के लिए दूसरे का कत्ल कर देता है। उसका प्रिय पुत्र अबशालोम एक राजद्रोह में मारा जाता है जिसमें राजा के अपने सिंहासन और प्राण का भी खतरा था। उसका भरोसेमंद सेनापति योआब उसके सबसे बड़े पुत्र अदोनिय्याह के षड्यन्त्र में उसका साथ देता है; और दाऊद सुलैमान की गद्दी सुरक्षित करने के लिए उसे सिंहासन पर बिठा देता है। चालीस वर्ष के राज्य के बाद दाऊद की मृत्यु इसके शीघ्र बाद हो जाती है।

6. दाऊद के शासन की विशेषताएं। –दाऊद का शासन इब्रानी इतिहास में सबसे शानदार था। सुलैमान का शासन बाहरी तौर पर उससे अधिक अच्छा था, परन्तु समृद्धि और शक्ति में दाऊद का शासन चरम तक था।

क. यह एक सैनिक शासन था। –इस काल में पश्चिमी एशिया के छोटे देशों को अपने आप पर छोड़ते हुए, मिसर और अश्शूर पतन की ओर बढ़ रहे थे। सुरक्षा केवल सर्वोच्चता में है। आरम्भिक वर्षों में शाऊल की शानदार सफलताएं दाऊद के विजयी अभियानों से धूमिल हो गई थीं और मिसर से लेकर फरात तक, दाऊद के साम्राज्य की महानता बढ़ रही थी।

ख. यह अन्दरूनी सुधार का युग था। –दाऊद एक जन्मजात राजा अर्थात स्वाभाविक संगठनकर्ता था। उसने राज्य के राजनैतिक संगठन और औद्योगिक बलों को संगठित किया; उपयोगी और सजावटी कला की शुरुआत की; गोदाम और किले बनवाए; सबसे बढ़कर उसने यरूशलेम को बढ़ाया और इसकी किलाबंदी की, वहां एक शाही महल बनवाया और ''दाऊद का नगर'' को देश का गौरव बना दिया।

ग. यह एक साहित्यिक शासन था। –बाइबल की सबसे अच्छी कविताएं भजन संहिता में ही हैं और सबसे अच्छे भजन दाऊद ने ही लिखे हैं। परन्तु जैसा हम आगे देखेंगे, दाऊद अकेला ही लेखक नहीं था और न ही कविता साहित्य का एकमात्र रूप थी। सबसे बढ़कर

घ. यह एक धार्मिक शासन था। –अपनी एक काली करतूत के बावजूद दाऊद का मन बहुत ही धार्मिक था। उसका जीवन सही दिशा में था। परमेश्वर में विश्वास, परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी, परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता ऐसे गुण हैं जो उसे दूसरे हर राजा से अलग करते हैं जिनसे देश पूरी तरह प्रभावित था। उसने पवित्र संदूक को किर्यत्यारीम से जहां यह पलिश्तियों के कब्ज़े में आने के बाद पड़ा हुआ था, लाया। उसने देश के धार्मिक जीवन को उच्चतम स्तर तक ले जाकर उसे संगठित करके फिर से सक्रिय किया। उसने मन्दिर बनाने की तैयारी की जिससे उसे केवल परमेश्वर ने रोका था। एक ही सच्चे परमेश्वर की आराधना

की श्रद्धा से दाऊद ने बाद के सब राजाओं के लिए एक नमूना पेश कर दिया। ''वह दाऊद की लीक पर चलता था''; ''वह दाऊद की लीक पर नहीं चलता था''; ऐसा फार्मूला है जिसका इस्तेमाल इतिहासकार दाऊद के बाद आने वाले राजाओं की प्रशंसा या उनकी निंदा के लिए करते हैं। वह सारी पृथ्वी पर धार्मिकता से राज्य करने वाले मसीहा का उच्चतम प्रतिरूप ही था।

IV. सुलैमान का शासन और स्वभाव (1 राजा 2-11; 2 इतिहास 1-9)

1. सुलैमान का राज्यारोहण तथा शासन। -सुलैमान पहला ''कुलीन'' इब्रानी राजा था। उज़राधिकार का प्रश्न पूरे इतिहास में ही परेशान करने वाला है। दाऊद के अपनी अलग-अलग पत्नियों से बीस या इससे अधिक लड़के थे। अम्नोन और अबशालोम की तो जैसा हम पहले हम देख चुके हैं, भयानक मृत्यु हुई थी। दूसरे बड़े लड़कों को छोड़ते हुए दाऊद ने सुलैमान को अपना उज़राधिकारी चुना। उसकी यह पसन्द शायद, सुलैमान की मां बतशेबा के प्रति पक्षपात के कारण थी, परन्तु अधिक सज़्भावना सुलैमान की अच्छी योग्यताएं होंगी। अदोनिय्याह के विद्रोह पर सुलैमान को मुकुट पहनाने की जल्दी के कारण, दाऊद की मृत्यु के बाद उसका सिंहासन पर बैठना आसान हो गया। परन्तु अदोनिय्याह के पक्ष में एक और षड्यन्त्र पता चलने पर सुलैमान ने तुरन्त योआब और अदोनिय्याह को मारने का आदेश दे दिया। इस प्रकार वह अपने पिता के विशाल राज्य पर अकेला राजा था। चालीस वर्ष के शासन के दौरान, देश के अन्दर या बाहरी समस्या के कारण उस देश के सुधार की योजनाओं में कोई रुकावट नहीं पड़ी।

2. सुलैमान की समझदार पसन्द। -अपने राज्यारोहण के शीघ्र बाद सुलैमान ने यरूशलेम से सात मील उज़र की ओर, गिबोन में जहां पुराना मन्दिर अभी भी खड़ा था, एक भव्य धार्मिक पर्व मनाया। स्पष्टतया पूरे साम्राज्य का बोझ उसके कोमल मन पर आ पड़ा था, ज़्योंकि उस रात एक स्वप्न में परमेश्वर ने उसे दर्शन देकर कहा था कि वह जो भी मांगेगा उसे मिलेगा; जो कि हमें एक खतरनाक स्वतन्त्रता लगती है। आम लोगों के दिमाग की छोटी बातों को नज़रअन्दाज करके सुलैमान ने अपने लोगों पर शासन करने की बुद्धि मांगी। ''उसने बुद्धि की मांग करके अपनी समझ दिखा दी''; और उसे अपने सब समकालियों से बढ़कर बुद्धि दी गई। उसकी बुद्धि के उदाहरण व्यावहारिक न्याय में (1 राजा 3:16-28), और वैज्ञानिक ज्ञान तथा साहित्यिक निपुणता में मिलते हैं (1 राजा 4:29-34)। उसकी तीन हज़ार लोकोज़्तियों में से, हमारे पास एक हज़ार से भी कम हैं; और उसके एक हज़ार ''गीतों'' में से केवल भ.सं. 72 और 128 को निकालकर, जो उसके माने जाते हैं, पांच ही सज़्भालकर रखे गए हैं। इतने प्रबन्धकीय दायित्वों और भवन निर्माण के कार्य के बावजूद ऐसी साहित्यिक सक्रियता उसकी बौद्धिक क्षमता का वर्णन करती है और पवित्र शास्त्र की बात कि ''जिन्होंने सुलैमान की बुद्धि की कीर्ति सुनी थी, उसकी बुद्धि की बातें सुनने को आया करते थे''[4] के साथ शीबा की रानी की बात कि ''उसका आधा भी मुझे न बताया गया

था''[5] समझना आसान हो जाता है।

3. सुलैमान का मन्दिर। -जवान राजा की सबसे पहली चिंता मन्दिर खड़ा करना था। दाऊद ने योजना और व्यापक तैयारी तो पहले ही कर ली थी। सोर के राजा हूराम से समझौते होने पर लबानोन से देवदार और निपुण कारीगर मिल गए। मन्दिर बनाने में सात वर्ष लग गए। मुज़्य इमारत केवल तीस गुणा नज़्बे फुट (मन्दिर से दोगुणी), थी, जो मूर्तिपूजकों के बड़े-बड़े मन्दिरों और संसार के मसीही कैथेड्रलों के आगे छोटी थी; परन्तु बहुमूल्यता में अनुपम थी। इसे साठ करोड़ डॉलर लागत मूल्य के सोने से सजाया गया था। परन्तु इसकी सर्वश्रेष्ठता अदृश्य परमेश्वर की किसी प्रकार के किसी स्पष्ट चित्र का न होना था। अश्लील, कामुक मूर्तिपूजक युग में यह एक उच्च आत्मिकता का पक्ष लेने वाली इमारत थी ''स्वर्ग में वरन सबसे ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में ज़्योंकर समाएगा।''[6] ''तो तू अपने स्वर्गीय निवासस्थान में से सुनकर क्षमा करना।''[7] समर्पण की अपनी प्रार्थना में सुलैमान ने ऐसी उच्च भावनाएं प्रकट की थीं। मन्दिर का पूरा होना दाऊद के राष्ट्रीय राजधानी के आदर्श का पूरा होना था। देश का मिशन सैनिक नहीं बल्कि आत्मिक सज़ा थी; भौतिक नहीं बल्कि नैतिक चमक थी। भौतिक बलों की वाजिब सीमा वहीं तक थी जहां वे आत्मिक लक्ष्यों की पूर्ति के लिए रुक जाती थी और राष्ट्रीय आदर्श को पूरा करने में सहायक थी। पहला मन्दिर नबुकदनेस्सर द्वारा गिराए जाने तक चार सौ से अधिक वर्ष तक खड़ा रहा।

4. सुलैमान के अन्य भवन। -इब्रानी भवन निर्माण में सुलैमान का शासन अगस्टन का युग था। ''और राजा ने बहुतायत के कारण, यरूशलेम में चांदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पत्थर और देवदारू को जैसे नीचे के देश के गूलर।''[8] उसने अपने लिए और फिरौन की बेटी के लिए एक-एक शानदार महल बनवाया, जो उसकी सही रानी लगती है, और अपने साम्राज्य के विभिन्न भागों में कई किलों व नगरों का निर्माण किया, जिनमें रोमी समय के पलमीरा जैसा, तामार सबसे प्रसिद्ध था।

5. सुलैमान का व्यापार। -यहूदी लोग मूलत: झुण्डों और गल्लों की देखभाल करने वाले चरवाहे थे। मिसर में और विजय के बाद, वे खेतीबाड़ी करने वाले लोग बन गए जो पशुओं के साथ-साथ फल और अनाज भी पैदा करते थे। लेकिन अब, पहली बार वे व्यापारी बने। सूर के राजा के साथ समझौते के द्वारा वे स्पेन में तरशीश तक भूमध्य के साथ-साथ व्यापार करने लगे जबकि लाल सागर पर बन्दरगाहों के द्वारा भारत के साथ उनका काफी व्यापार था। वे पड़ोसी देशों, फीनीके, मिसर और अरब के साथ भी विनिमय करते थे।

6. सुलैमान की गिरावट। -कुछ लोगों की जीवनियां सुलैमान की जीवनी की तरह निराश करने वाली होती हैं। वह राजाओं के सामान्य झुण्ड के निज़्नस्तर तक *कभी नहीं* आया; परन्तु उसके बाद के वर्षों का पूरा होना बुरी तरह से उसके यौवन की बड़ी प्रतिज्ञा से फिरना है।

क. राजा के लिए दिए गए नियम का उल्लंघन। -मूसा ने (व्यवस्था. 17:14-20)

राजा के लिए नियम ठहराया था। तीन तरह से सुलैमान ने इसका उल्लंघन किया: (1) घोड़े बढ़ाकर (1 राजा 10:26), जो युद्धप्रियता का चिह्न और संकेत है; (2) अपने जनानखाने में पत्नियों की संख्या एक हज़ार तक बढ़ाकर; (3) चांदी और सोने को बहुत अधिक बढ़ाकर जो अपने लोगों को दरिद्र करके ही हो सकता था। इसके साथ ही उसने ये बातें भी जोड़ीं:

ख. धर्मतन्त्र की मूल व्यवस्था के गंभीर उल्लंघन।–''तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना''[9] पहली ही आज्ञा थी। इस्राएल पवित्रता से इसे पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध था। कौम का *उद्देश्य* विश्वव्यापी बहुदेववाद की जगह शुद्ध आत्मिक आराधना को लाना था; कौमी अस्तित्व के लिए कोई दूसरा पर्याप्त कारण नहीं था। ''सो जब सुलैमान बूढ़ा हुआ, तब उसकी स्त्रियों ने उसका मन पराए देवताओं की ओर बहका दिया।''[10]

ग. कौमी निर्बलता और पतन के तत्व।–राजा के लिए दिए गए नियमों के उल्लंघन और राजा के नियम निर्बलता का कारण सिद्ध हुए, और इनके कारण उसके घराने पर परमेश्वर का न्याय आया। भविष्य में होने वाले विभाजन की बात प्रकट कर दी गई और उसके बाद के जीवन से देश में और बाहर के कर देने वाले देशों में असंतुष्टि और बेचैनी के चिह्न देखे गए। परन्तु कोई बड़ा विद्रोह नहीं हुआ और सुलैमान के लज़्बे शासन का अन्त शांति से हो गया।

V. भविष्यवक्ताओं का उदय

अपने युग में और सदियों बाद मूसा ही अकेला श्रेष्ठ व्यक्ति है। यहोशू और शमूएल के बीच भी किसी भविष्यवक्ता का नाम नहीं है। परन्तु शमूएल और राजतन्त्र के साथ महान भविष्यवक्ताओं के युग की शुरुआत होती है। भविष्यवक्ता राजा का महत्वपूर्ण पूरक था; और शमूएल और शाऊल के दिनों से लेकर पुराने नियम के इतिहास की पुस्तक के अंत तक उसके विलक्षण व्यक्तित्व और प्रभावशाली संदेश की आवश्यकता रहती है। शाऊल के विपरीत शमूएल अधिक श्रेष्ठ व्यक्ति है। भविष्यवक्ताओं में से एक महान भविष्यवक्ता होने के बावजूद दाऊद को भी भविष्यवक्ताओं द्वारा लगातार परामर्श, चेतावनी और डांट दी जाती थी। भविष्यवक्ताओं ने सुलैमान के शासन में कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाई, यद्यपि अंत में एक भविष्यवक्ता मिलता है। उस काल के भविष्यवक्ता शमूएल, गाद (1 शमू. 22:5; 2 शमू. 24:11), नातान (2 शमू. 7:2–17; 12:1–12; 1 राजा 1:8–24), इद्दो (2 इति. 9:29; 12:15; 13:22) और अहिय्याह हैं (1 राजा. 11:29–39; 2 इति. 9:29)। इतिहास में शामिल नातान के दृष्टांत की तरह, यहां वहां से कुछ बातें मिलने के अलावा हमारे पास इनमें से कोई और शिक्षा नहीं है।

VI. उस काल का साहित्य

इब्रानी साहित्य की प्राचीनतम समय की स्थिति बताना असज़्भव है। ऐसा नहीं लगता कि पंचग्रन्थ मूसा से पहले के दस्तावेज़ों पर आधारित हों। लामेक का ''तलवार का गीत'' (उत्पज़ि 4:23, 24) और गिनती 21:12–17, 27–30 वाली कविता की कविता के अंश,

अतिप्राचीन काव्य संग्रहों की ओर इशारा करते हैं। यहोशू की पुस्तक सम्भवत: शमूएल के समय में संकलित की गई, ''याशार की पुस्तक'' के उद्धरण अब नहीं मिलते। दाऊद के समय से एक समृद्ध ऐतिहासिक साहित्य निकला, जो मिसर या कसदिया या अश्शूर के पुराने साम्राज्यों द्वारा दिए गए किसी भी साहित्य से उज़म था। न्यायियों और रूत की पुस्तक सम्भवत: उसके शासन के समय ही लिखी गई। उस काल की अन्य ऐतिहासिक पुस्तकें ''शमूएल का इतिहास,'' ''नातान का इतिहास,'' ''गाद का इतिहास'' (1 इति. 29:29), और ''सुलैमान के कामों की पुस्तक'' (1 राजा 11:41), अब नहीं मिलतीं, परन्तु नि:संदेह वे शमूएल और राजाओं की हमारी वर्तमान पुस्तक का आधार हैं। परन्तु दाऊद और सुलैमान का युग विशेष तौर पर अपने उच्च दर्जे की कविता और ''बुद्धि'' साहित्य के तौर पर जाना जाता है। भजनों में बहज़र भजन दाऊद के और दो (72वां और 128वां भजन) सुलैमान के लिखे माने जाते हैं। सुलैमान के साहित्य में दाऊद के लेखों का आत्मिक जोश कम मिलता है, परन्तु इसमें सैद्धांतिक शज़्ति और कलात्मक परिपूर्णता अवश्य है। उसके प्रमुख काम नीतिवचन, सभोपदेशक और श्रेष्ठगीत हैं।[11]

पाद टिप्पणियां

[1]1 शमू. 16:13. [2]1 शमू. 18:7. [3]1 शमू. 18:9. [4]1 राजा 4:34. [5]1 राजा 10:7. [6]1 राजा 8:27. [7]1 राजा 8:39. [8]1 राजा 10:27. [9]निर्ग. 20:3. [10]1 राजा 11:4. [11]सभोपदेशक बाद के काल से सम्बन्धित हो सकती है।